इस बात से यह कभी नहीं लगा कि वे अकेले उसी क़बीले को दोषी ठहरा रहे हैं। लेकिन वे थे कि इसी वाक्य को अपनी समर्थक बात मानकर जश्न मनाना शुरू कर देते थे। कभी अपने देशवासियों को भी दुरदरा देते थे। जो हमारे साथ नहीं वह हमारे दुश्मन के साथ हैं, भले ही वे बेचारे दुश्मन का हदुदर्बा भी न जानते हों। यह ठीक वैसी ही बात थी, जो इदारे टूटने पर जान बी ने अपने कबीले के लोगों और दुनिया के दूसरे कबीलों को धमकाने और डराने के लिए कही थी।

अस्मिता पर हमला नहीं यह पूरी दुनिया के अमनपसंद और जनतांत्रिक लोगों को चेतावनी है। आज रणछोड़ रक्षा इदारा क्षतिग्रस्त हुआ, कल आप सबके घरों में यह वबा घुसकर एक-एक को हलाक करेगी। आप हमारे साथ नहीं तो उनके साथ हैं जो इंसानियत के दुश्मन हैं। इंसान के इन दुश्मनों का इस ज़मीन पर कोई काम नहीं। हमें इसका मुकाबला मिलकर करना होगा। अपनी इस दुनिया से इस अमानवीयता को अलविदा कहने के लिए तैयार हो जाओ। वरना तुम्हें अलविदा कह दिया जाएगा।''

लोगों ने 'अपनी दुनिया' का मतलब तमाम दुनिया समझा। क़बीलों के लोग सज-सजकर जान बी रणछोड़ के साथ एकजुटता दिखाने और अपनी दोस्ती की शपथ खाकर जाानिसारी का यक़ीन दिलाने के लिए जाने लगे।

जान बी हर क़बीला चीफ़ को गले लगाकर कहता था- ''खुदा न करे, आप पर ऐसी मुसीबत आए, ऐसे में आप हमें अपने बराबर में खड़ा पाएंगे।'' लोग गदगद। पता नहीं जान बी ने उन्हें क्या दे दिया।

इसी तरह सारा साल गुज़र गया। लोग अपनी बरबादी स्वयं भोगते रहे। इस बीच जान बी ने हवा अपने पक्ष में बहती देख कई एक क़बीलों की शिनाख़्त की और उनको अपने बदले का शिकार बनाया। जिन कबीलों की दोस्ती का दम भरा था उनमें से एक बहुत बड़े कबीले की पंचायत पर हमला हुआ। वह हमला जान बी के इदारों पर हुए हमले से किसी कद्र कम नहीं थी।

उस हमले के पीछे माना जा रहा था कि जान बी के पिता के जमाने से उनके अनुयायी एक शत्रु कबीले का हाथ है। जान बी, उसके कारिंदे यही कहते रहे कि यह गलत हुआ, हम उसे रोकेंगे। लेकिन जितना हमले के शिकार कबीले के लोग जा-जाकर फ़रियाद करते थे और जान बी जितनी ज़ोरदारी से आश्वासन देता था, उतना ही हमलों में इज़ाफा होता था पर वे मूर्ख जान बी के मुस्कुराकर आश्वासन दे देने मात्र से तब तक फूले-फूले घूमते जब तक फिर बिल्ली की तरह दबे पांव आकर वे अगला हमला नहीं कर देते थे।

बच्चों, औरतों, बूढ़ों, जवानों, पंचायतों और मंदिरों पर लगातार हमले हो रहे थे। लोग परेशान थे। इस बीच कबीले का हर शीर्ष व्यक्ति जान बी के तकिए की ज़ियारत कर आया था और मानता मान आया था। पर हर बात का एक ही जवाब था- ''नहीं हम इस बात से पूरी तरह मुतमईन हैं कि बिना हमले रुके दोनों क़बीलों में शांति नहीं हो सकती। हम दूसरे क़बीले पर भी जोर डाल रहे हैं कि वे इस तरह का आक्रमक रुख कतई बंद करे।''

इस बात से यह कभी नहीं लगा कि वे अकेले उसी क़बीले को दोषी ठहरा रहे हैं। लेकिन वे थे कि इसी वाक्य को अपनी समर्थक बात मानकर जश्न मनाना शुरू कर देते थे। कभी अपने देशवासियों को भी दुरदरा देते थे। जो हमारे साथ नहीं वह हमारे दुश्मन के साथ हैं, भले ही वे बेचारे दुश्मन का हदुदर्बा भी न जानते हों। यह ठीक वैसी ही बात थी, जो इदारे टूटने पर जान बी ने अपने कबीले के लोगों और दुनिया के दूसरे कबीलों को धमकाने और डराने के लिए कही थी। बातें ज़रूर ज़मीनी सच्चाई की की जा रही थीं।

एक साल बाद फिर वही तारीख आई, जब जान बी रणछोड़ के इदारे टूटे थे तो जान बी ने बरसी मनाने की घोषणा की। इस एक साल में जान बी ने दुश्मन को पकड़ने, मारने, उसका घर बर्बाद करने की हर कोशिश की थी, पर शत्रु के मालूम होने के बावजूद कहीं कुछ नहीं हो पाया था। जान बी लगातार उसके दमन की घोषणा, स्टेशन पर गाड़ियों की आवाजाही के एनाउन्समेंट की तरह अखबारों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से कर रहा था।

इस बरसी पर भी उसने वही घोषणा कुछ डरावने ढंग से की- ''हमें मालूम है, हमारा